

S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE
2, CITÉ DU COUVENT
75011 PARIS

TÉL. 370-97-84

पेरिस, 20 मार्च, १९८३

आदरणीय गुरु श्री केलकर जी को
सप्रेम नमस्कार -

आपका प्रिय पत्र मिला। इतने वर्षों के बाद आपके शुभ समाचार पाकर हार्दिक आनन्द हुआ। मैं आपके हिन्दी में ही लिख रहा हूँ, यही एक सरल साक्ष्य है कि वर्षों विदेश में रहकर भी मैं अपनी भाषा, अपने देश, गुरु व मित्रों के नहीं भूला हूँ। दूर होने के कारण ही यह सम्बन्ध और भी जीवन सही बना है और मूल जड़ों से शक्तियाँ मिली हैं। विश्वास कीजिये कि मेरे मन में बचपन की स्मृतियाँ अमर हैं, मध्य प्रदेश और नागपुर की शालाओं में पाई शिक्षा को हमेशा आभा सहित याद करता हूँ।

पिक्ली कार, १९७८ में, कुछ दिनों के लिये ही, भोपाल आया था, मध्य प्रदेश शासन के निमंत्रण पर। यहाँ के कार्यक्रम सालों पहले निश्चित हो जाते हैं, और फिर मुझे गाल्दी में ही पेरिस लौटना पड़ा। कई प्रदर्शनियों में भाग लेना था, यूरोप में : नार्वे, स्विट्जरलैंड, इंग्लैंड, डेनमार्क और फ्रांस में भी। कला के दृष्टि से पेरिस का जीवन कठिनाइयों और तनाव से भरा संघर्ष है और आधुनिक दबावों और चुनौतियों का सामना करते हुए हमें अपनी पूरी क्षमता से सक्रिय रहना है। आपके आशीर्वाद से प्रदर्शनियाँ सफल हो रही हैं। चित्र पसन्द किये जा रहे हैं, और भी, अभी भी कबो अमर की आवश्यकता है। मेरा कार्य केवल एक ही विषय पर केन्द्रित है : "धरती", जहाँ मूल उद्गम है और अन्त भी। इसी "धरती" की दूँ, आवेग, लड़ख और पीड़ा में ही हुई, और अभी ही जानकारी बढ़ी है कि प्रकृति की सारी समस्याएँ, जीला, रहस्य मन मानस में उपस्थित हैं। अपने तब, पहुँचने में समय लगा, चित्र तत्वों की ढोज में सालों बीत गये, पर अब चाहता हूँ कि परिचित भावनाओं के रेखाओं और रंगों में रूपान्तर किये जा सकें - भारतीय संगीत की तरह।

आशा है कि चित्र बता सकेंगे कि "प्रकृति से बीज तक" पहुँचना स्वाभाविक है, और फिर लौटना आदि स्रोत "बीज" से "प्रकृति" तक। मालूम नहीं। केवल ...

"विन्दु" की समावर्ण्य प्रत्यक्ष है। यही उर्जा केन्द्रित है, पंच तत्त्वों का समावेश हुआ है। आज चेतना को कार्य-क्रिया से मिलाना है। और मुझे विश्वास है कि आधुनिक भारतीय चित्रकार इस कार्य में पूरी तरह से समर्थ है।

फिर देश आने की बड़ी इच्छा है। आपका निमंत्रण - 22 मई, "अमृतोत्सव" के लिये जो अहमदनगर में आयोजित होगा, मिला है। केवल कठिनाई यही है कि इस वर्ष भी कार्यक्रम का बन्धन हमेशा की तरह सम्बन्ध है। व्यस्तता का अन्त नहीं। फांसीसी सांस्कृतिक विभाग के लिये भी कार्य देना है और आवश्यक ही लग रहा है कि यहाँ दिसम्बर तक एकाग्रता से कार्य करना होगा। अक्टूबर 23 में जानिन भी नोर्वे में एकल प्रदर्शनी का रही है, वहाँ भी जाना है। बस एक ही आशा है कि जनवरी 28 में कुछ समय के लिये देश आ सकूँगा। जब निश्चित होगा, आपके अवश्य लिखूँगा।

मुझे एहसास है कि आप मुझे भूलें नहीं। (बन्ध और सम्बन्ध है)। जब समय मिले पत्र अवश्य लिखें। मिडलै बनी सिटीजलैड में प्रदर्शनी का एक कार्ड भेज रहा हूँ। आशा है आप मेरी हिन्दी समझ सकेंगे। चाहे तो मराठी या अंग्रेजी में ही लिखें। आपके पत्र पाकर सुख, आनन्द, और गौरव का अनुभव करता हूँ।

22 मई को मैं - उत्सव के समय "गुरु पूजा" की ध्याना एवम् मन से ही, आपके पास उपस्थित रहूँगा।

मेरी और जानिन की ओर से सादर प्रणाम -

आशा सहित, आपका

एजा